© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

माध्यमिक स्तर के मूक–बधिरान्ध में अक्षम विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा एआकांक्षा स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन

[1]Sarjeet Singh, [2]Nav Prabhakar lal Goswami
[1]Researche Scholar, [2]Ph.D Supervisor , Mahatma Jyoti Rao Phoole University Jaipur

प्रस्तावना

कोई भी लक्ष्य तब मूल्य बन जाता है। जब उसमे कोई रूचि लेता है। कोई भी चीज तब निशाना बन जाती है। जब उस पर कोई निशाना लगाता है। .आर. बी. पैरी

'हम देह से अधूरे पर आत्मा से पूरे ।
पूरे शरीर वालों हमको गले लगा लो।।'

हमारा समाज प्रारम्भ से ही किसी भी प्रकार से विकलांग वर्ग के बालको के प्रति हेय नजरिया रखता है। जिसको ध्यान मे रख कर श्री मधुर शास्त्री जी की इन पंक्तियो ने स्पष्ट किया है कि समाज विकलांगों के प्रति उपेक्षा का व्यवहार करता है विकलांग वर्ग सदा से ही समाज में उपेक्षित वर्ग रहा है । उपेक्षा ही नही घृणा भी इनके प्रति देखने को मिलती है। प्राचीन काल से ही मानव समाजों ने विकलागों को उचित सम्मान एवं अधिकार नही दिया ऐसा क्यों किया गया ? इस प्रश्न का उत्तर देना बहुत ही मुश्किल है । जब कभी हम विकलांगो के बारे में सोचते है , विचार करते है या बोलते हैं तब हमें अनायास ही प्लेटों और अरस्तु के समय की याद आ जाती है । उस समय शारीरिक विकलांग या मानसिक विकलांग को उसके या उसके पूर्वजों द्वारा किये गये पापों का फल एवं ईश्वर का अभिशाप माना जाता था। जब तक की सृष्टि के निर्माता ईश्वर स्वयं ही उस पर कृपा दृष्टि न डाले । किसी व्यक्ति का विकलांग होना भाग्य की ऐसी मान समझी जाती थी, जिससे विकलांग जीवन भर उठ–बैठ नहीं सकता था। इसी धारणा के कारण विश्व के बहुत से भागों में विकलांगों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता है। एक समय इतिहास में ऐसा भी था जब पालन–पोषण करने के बजाय उसकों तुरन्त मौत के घाट उतार दिया जाता था। हमारें देंश भारत में भी वर्षो तक विकंलांगों कों परजीवी समझा जाता था। इस प्रकार सदियों तक विकलांग तिरस्कृत एवं उपेक्षित ही रहें। परिणामस्वरूप उनका जीवन उनके लिए ही